अध्याय 18

संक्षेपण

संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के सुरक्षित रखल जाला। आ ओह मूल भाव के स्पष्टीकरण में आइल प्रासंगिक-अप्रांसगिक उदाहरण, मुहाबरा, विशेषण अलंकार आदि जे भाव के विश्लेषण करे में सहायक रहेला ओकनी के छोड़ दिहल जाला आउर मूल भाव के पास पास ला दिहल जाला।

सुघड़ संक्षेपण में नीचे लिखल गुण होखे के चाहीं-

1. **मूल के पूर्ण सार**-संक्षेपण मूल के सार होला आ पूर्ण भी होखेला। संक्षेपण के रूप अइसन होखे के चाहीं कि ओकरा के पढ़ला के बाद मूल पढ़े के जरूरत ना पड़े आ सब भाव के जानकारी मिल जाव।

2. **क्रमबद्धता**-संक्षेपण में मूल के सब विचार एगो निश्चित क्रम में रखल जाला।

3. **संक्षिप्तता**-संक्षेप मूल संक्षेपण के अनिवार्य शर्त ह। संक्षेप के अर्थ लगावल जाला मूल के तिहाई।

4. **स्पष्टता**-भाव के स्पष्टीकरण के खातिर वक्ता भा लेखक अपना मूल विचार के संगे-संगे अनेक उदाहरण, अलंकार, विशेषण जोड़ देलन। बाकिर इहे सफाई पाठक भा श्रोता खातिर बोझा बन जाले। सफल

संक्षेपणकर्ता फिजूल के उदाहरण, असंगत शब्द, पद भा वाक्यांश के हटा के मूल भाव के सरल आ स्पष्ट रूप में रख देवे के काम करेलन।

5. शुद्धता- संक्षेपण में शुद्धता के बड़ा महत्व बा। शुद्धता सिर्फ शब्द के ही ना भाव के भी होखे के चाहीं। अपना तरफ से कवनो मिलावट ना होखे के चाहीं। नवीनता से बचे के चाहीं।

6. प्रभावात्मकता- मूल के प्रभाव आ संक्षेपण के प्रभाव में अंतर ना होखे के चाहीं। शब्द के संख्या घटावल कवनो बड़ काम ना ह। शब्द घटे बाकिर प्रभाव ना घटे ई बड़ काम ह। मूल पाठ में लेखक जवना बात पर बल देले होखस ओही बात पर संक्षेपणकर्ता के भी बल होखे के चाहीं ना कि कतही अउरी। ना त लेखक के साथ अन्याय हो जाई।

संक्षेपण करे के नियम

1. सबसे पहिले मूल पाठ के बार-बार आ तब तक पढ़े के चाहीं जब तक कि ओकरा भाव के खुलासा ना हो जाव।

2. मूल के भाव समझला के बाद ऊ-ऊ शब्द, पद, वाक्यखण्ड, वाक्य के चिन्हित करे के चाहीं जवना के संबंध मूल विचार से सीधा जुड़ल होखे।

3. संक्षेपण के अंतिम रूप देवे के पहिले रेखांकित पद, वाक्यखंड के आधाार पर रूपरेखा बनावे के चाहीं फिर ओकरा में उचित आ आवश्यक संशोधान जोड़-घटाव क के क्रमिक रूप से लगभग एक तिहाई शब्दन में लिख देबे के चाहीं।

4. ई बात के खास ख्याल रखे के चाहीं कि संक्षेपण मूल के संक्षेप ह ना कि मूल के बारे में राऊर विचार ह। एह से संक्षेपण में आपना टीका-टिप्पणी, मत, खंडन, मंडन के भाव से तटस्थ रहे के चाहीं।

5. संक्षेपण में अवतरण के लेखक के नाम, पता आ परिचय भी अगर होखे त लिखे के चाहीं।

6. प्रारूप के संक्षिप्त रूप देबे के पहिले मूल अवतरण के शब्द संख्या गिन लेबे के चाहीं। संक्षेपित शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे त लगभग एक तिहाई में संक्षेपण करे के चाहीं। एक तिहाई के मतलब गणित के फार्मूला के अनुसार 1/3 ना होखेला। शब्द घट-बढ़ भी हो सकेला मगर घट-बढ़ के भी सीमा होला अधिक से अधिक 5 प्रतिशत कम भा बेशी शब्द हो सकेला। ओकरा आगे अड़चन होई।

7. संक्षेपण के एगो सरल सटीक, सार्थक आकर्षक आ भाव से संबन्धित शीर्षक देवे के चाहीं। शब्द संख्या के उल्लेख कर देबे के चाहीं।

8. संक्षेपण अपना भाषा में आऊर जवना काल में अवतरण होखे ओही काल में करे के चाहीं।

संक्षेपण करे में धयान देबे के चाहीं

1. संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचे के चाहीं।

2. संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ

प्रगट में सहायक होखे, शेष के छोड़ देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द रख देबे के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं कि मूल के अर्थ में उलट फेर ना होवे।

3. संक्षेपण प्रत्यक्ष कथन शैली में ना लिखके अप्रत्यक्ष कथन शैली में लिखे के चाहीं।

4. संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से बचे के चाहीं।

5. भाषा व्याकरण सम्मत होखे के चाहीं।

6. संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह होखे के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

कुछ उदाहरण

उदाहरण-1

प्रकृति के अनेक रूप बा। प्रकृति हमनी के सामने अलग-अलग आ अनंत रूप में आवेली। कहीं सरस, सुन्दर, सुमधुर आ सुसज्जित रूप में त कहीं कर्कश, बेडौल भा भयानक रूप में। कहीं भव्य, विशाल भा विचित्र रूप में त कहीं उग्र, विकराल आ भयंकर रूप में। सच्चा कवि के हृदय प्रकृति के सब रूप में लीन हो जाला। काहे कि ओकर लगाव के कारण आपन खास सुख-भोग ना हो के चिरसाहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना होला। जे कवि प्रकशति के प्रफुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ संचार, मकरन्दलोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिलकूजित निकुंज आ शीतल सुख स्पर्श समीर के

ही चर्चा करेलन उनका के विषयी भा भोगलिप्सु कहल जाला। एही तरह से जे मुक्ताकाश हिम-विन्दुमंडित मरकताभ शाद्वजाल, विशाल गिरि शिखर से गिरते जलप्रपात के गंभीर गति से उठत सीकर नीहारिका के बीच विविध वर्णी स्फुरण के विशालता, भव्यता आऊर विचित्रता में ही सबकुछ पावेलन, उ तमाशबीन हवन, सच्चा भावुक आ सहृदयी कवि ना हो सकेलन। प्रकृति के साधारण-असाधारण, सुन्दर-कुरूप, सुडौल-बेडौल सब प्रकार के रूप के वर्णन बाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत के प्राचीन कविगन में मिलेला। पिछला खेवा के कविलोग मुक्त रचना में प्रकृति के वस्तुन के अलग-अलग उल्लेख मात्र उद्दीपन के दशष्टि से कइलन। प्रबंध रचना में थोड़ -ढेर सॅश्लिष्ट रूप में भी चित्रण कइलन, बाकिर प्रकृति के विशेष रूप विभूति के लेके ही कइलन।

(शब्द संख्या-212)

प्रकृति आऊर कवि

प्रकृति के दू गो रूप बा- सुन्दर आ असुन्दर। सच्चा कवि के हृदय दूनों रूप में रमेला। जे कवि खाली प्रकृति के बाहरी सौंदर्य के वर्णन करे ऊ सच्चा कवि न होके तमाशबीन भा भोगलिप्सु कहालन। प्रकृति के सच्चा आ सम्पूर्ण रूप के चित्रण संस्कृत के प्राचीन कविजन प्रबंध भा मुक्तक सरल भा सॅशिलष्ट दूनों रूप में कइलन। बाद के कवि सिर्फ उद्दीपन रूप में ही वर्णन कर पइलन।

(संक्षेपित शब्द संख्या-69)

उदाहरण-2

काश्मीर से कन्याकुमारी तक फैलल आपन देश भारत आकार आऊर आत्मा दूनों दृष्टि से महान् आऊर सुन्दर देश बा। एकर बाह्य सौंदर्य विविधता के सामंजस्य पूर्ण स्थिति ह, त आत्मा के सौंदर्य विविधता में छिपल एकता के अनुभूति करावेला। चाहे कभी ना गले वाला हिम के प्राचीर होखे, चाहे कभी न सूखे न जमे वाला अतल सागर, चाहे सूर्य के किरण रेखा से खचित धारती के हरियाली होखे, चाहे एकरस शून्यता ओढ़े मरूस्थल, चाहे घहरात घन-करिया बदरी होखे, चाहे लपट के साँस छोड़त बवंडर, सब आपन भिन्नता में भी एक ही देवता के विग्रह के पूर्णता प्रदान करेले। जइसे मूर्ति के कवनो एगो अंग टूट के संपूर्ण देव-विग्रह के खण्डित कर देला ओइसहीं अपना देश के अखण्डता खातिर विविधाता के स्थिति ह। अगर एह भौगोलिक विविधाता में व्याप्त सांस्कृतिक एकता न होइत, त इ देश विभिन्न नदी, पर्वत, वन के विचित्र संग्रह भर बन के रह जाइत। बाकिर एह देश के प्रतिभा एकरा आत्मा के रसमयता में प्लावित कइके एकरा के विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कइले बाड़े। जेह से इ देश आसमुद्र एगो नाम के परिधि में बँध जाला।

(शब्द संख्या-178)

भारत अनेकता में एकता

आपन देश भारत अनेक भौगोलिक आ प्राकृतिक विविधता से युक्त विशाल देश बा। ऊपरी विविधता के बावजूद, सांस्कृतिक एकता के

कारण एह देश के व्यक्तित्व अखण्ड बा, आत्मा एक बिआ। अगर आंतरिक एकता ना रहीत त इ देश अनेक विचित्रता के संग्रह भर बन के रही जाइत बाकिर अइसन नइखे इ सब विभिन्नता में भी एके के विभिन्न रूप ह।

(संक्षेपित शब्द संख्या-60)

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर ✓आ गलत पर ✗ के निसान लगाईं।

(क) संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के बदल दिहल जाला। ( )

(ख) कवनो मूल भाव भा विचार में बिना कवनो काट-छाँट कइले मूल के ग्रहण आ फिजूल के त्याग कइके कम भा छोट करे के भाव भा क्रिया के संक्षेपण कहल जाला।' ( )

(ग) संक्षिप्त शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे ते लगभग एक चौथाई में संक्षेपण करे के चाहीं। ( )

(घ) संक्षेपण के शीर्षक ना देवे के चाहीं। ( )

(ङ) 1998 में चार गो शब्द बा। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(रख देबे, अप्रत्यक्ष, होखे, ना करे, से बचे, प्रत्यक्ष, के छोड़)

(क) संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग .....के चाहीं।

(ख) संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ बतावे

में सहायक होखे, शेष .....देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द .....के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं।

(ग) संक्षेपण .....कथन शैली में ना लिखके .....कथन शैली में लिखे के चाही।

(घ) संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से.....के चाहीं।

(ङ) भाषा व्याकरण सम्मत ..... के चाहीं।

(च) संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह .....के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

3. नयल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) संक्षेपण के परिभाषा लिखीं।

(ख) शब्द गिने के का तरीका बा।

(ग) संक्षेपण के का काम ह।

(घ) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन-कवन गुण होखे के चाहीं? वर्णन करीं।

क्रियाभ्यास

(क) अपना पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न के उत्तर लिख के ओकर संक्षेपित रूप भी लिखे के प्रयास कइल जाई त परीक्षा अवधि में बड़ ला भ होई कोसिस करीं।